National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multinationaljournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 13-06-2026, Accepted: 13-07-2026, Published: 28-07-2026
Volume 11, Issue 3, 2026, Page No. 36-39

गिजू भाई बधेका जी के शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण सम्बन्धी विचारों का अध्ययन तथा उसकी उपयोगिता

एकता सक्सेना[1], डॉ0 रूपाली[2]
[1] शोधकर्ती, (शिक्षाशास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, मध्य प्रदेश भारत
[2] शोध निर्देशिका, (शिक्षाशास्त्र), श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, मध्य प्रदेश भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध में गिजू भाई बधेका जी के शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण सम्बन्धी विचारों का अध्ययन तथा उसकी उपयोगिता को प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य गिजू भाई के अनुसार शिक्षक के संबंध में विचारों का अध्ययन करना तथा गिजू भाई के अनुसार विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना।
वर्तमान अध्ययन गिजू भाई बधेका जी के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण से सम्बन्धित विचारों को सुव्यवस्थित किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि को चुना गया। प्रस्तुत अध्ययन में गिजू भाई बधेका जी द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों तथा गिजू भाई बधेका जी के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का प्रयोग किया गया।
गिजु भाई की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इन्होंने शिक्षक को एक मित्र और पथ–प्रदर्शक के रूप में देखा है। इनके अनुसार शिक्षक के ऊपर बालक के विकास का बहुत भारी उत्तरदायित्व है।
बातावरण बालक की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास के अनुरूप हो। शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए खुली हवा, स्वच्छता, अनुकूल समशीतोष्ण तापमान, स्वच्छ शौचालय, स्नानागार, धोने लायक शाला का फर्श, चौड़ी खिड़कियां, पौष्टिक भोजन, बागीचा, ऊँची छतें, लम्बे–चौड़े हाल तथा उससे सम्बद्ध छोटे–छोटे कमरे आदि शाला के लिए आवश्यक हैं।

मूल शब्दः गिजू भाई बधेका जी, शिक्षक, विद्यालय वातावरण

शिक्षा वही है, जो मानवीय अन्तः करण में अच्छे संस्कारों को पल्लिवित कर सके, दर्रे में घुसे हुए अनौचित्य को हिम्मत और निर्भयता के साथ निकालकर फेंक सके। शिक्षा वस्तुतः वह है जो व्यक्तिगत, पारिवारिक से सम्बन्धित एवं सामाजिक समस्याओं का स्वरूप एवं समाधान सुझाये। परन्तु आधुनिक शिक्षा या विद्या का स्वरूप बहुत कुछ बदल गया है। उसमें नैतिक शिक्षण और चरित्र निर्माण के लिए कोई स्थान नहीं है। वह कोरी, बौद्धिक उन्नति की और ही प्रयत्न है। विद्यार्थियों का चरित्र बल, कर्मशक्ति आशा, विश्वास, उत्साह, पौरूष, संयम और सात्विकता जागृत करने की शक्ति उसमें नहीं है। शिक्षा का स्तर भी हमारे यहाँ निरन्तर घटता जा रहा है। पिछले कई वर्षों से यह सब समस्यायें देश की अस्मिता के सामने मुँह फाडे खड़ी हैं और दिन–प्रतिदिन विकट होती जा रही हैं। अतः उपरोक्त ज्वलन्त समस्याओं के समाधान तथा देश की शिक्षा प्रणाली में आवश्कतानुसार संशोधन के लिए भारतीय दार्शनिकों एवं शिक्षाशास्त्रियों से विरासत में मिले शिक्षादर्शन का अवलोकन करना होगा। ठोस दार्शनिक विचार धारा की नींव पर ही सुव्यवस्थित शिक्षा महल खड़ा किया जा सकता है।
मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी है। वह बड़ा ही जिज्ञासु होता है एवं प्रतिक्षण अज्ञात के बारे में 'क्यों' और 'कैसे' का उत्तर पाने की चेष्टा किया करता है। अज्ञात के प्रति यही जिज्ञासा ही वैज्ञानिक प्रगति का मूलाधार है। एक ओर यदि वह प्रकृति का रहस्योद्घाटन कर अपनी मानसिक जिज्ञासा की तुष्टि करता है, तो दूसरी ओर समाज एवं उसके विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित घटनाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त कर अपनी ज्ञान पिपासा को शान्त करने के लिए भी प्रयासरत रहता है। पी0 वी0 यंग का विचार है–'' जिज्ञासा मानव मन का मौलिक गुण है तथा मनुष्य के पर्यावरण की खोज के लिए एक बहुत बड़ी चालक शक्ति है।''
बच्चों के सम्बन्ध में गिजुभाई के विचार अद्वितीय एवं अनोखे थे, वे कहते थे कि आज के नन्हें बालकों को वर्तमान परिस्थिति से जुड़ी कहानियाँ सुनाये, उन्हें गीत, रचना एवं कहानी लेखन हेतु प्रेरित करें। बालकों में त्याग एवं समर्पण का भाव विकसित करें, क्योंकि आज के बालक ही कल के कर्णधार हैं।

अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

गिजूभाई का शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण सम्बन्धी विचार वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसकी उपयोगिता को स्मरण में रखकर अनुसंधान कार्य किया जाना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है। भारतीय संदर्भ में उनके शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण सम्बन्धी विचारों का अध्ययन किया जाना तथा शिक्षा व्यवस्था में उन धारणाओं की उपयोगिता को जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी होगा। अतः शोधकर्ती ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण सम्बन्धित समता आधारित शैक्षिक प्रणाली के विकास के पक्षधर गिजूभाई के विचारों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उपयोगिता का अध्ययन किया।
शैक्षिक परिवेश में नवीन विचारधारा का विकास करने तथा उसमें संस्कारों का समावेश करने सम्बन्धी विचार का पोषण गिजू भाई द्वारा किया गया। गिजू भाई ने शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन पद्धति को जन्म दिया, जिससे सत्य के विभिन्न पक्षों का साक्षात्कार करने में मानव मत का अनेक दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया। उन्होंने बालक में अन्तर्निहित योग्यता एवं क्षमता के आधार पर तत्कालीन शैक्षिक परिस्थितियों एवं विभिन्न योग्यताओं और क्षमताओं तथा सांस्कृतिक सहिष्णुता का अध्ययन करके उसे अपने शैक्षिक चिन्तन में समाहित किया। उन्होंने शिक्षा पद्धति के संगठन में बालक को एक महत्वपूर्ण मानव के रूप में विकसित करने का विचार रखा।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

सम्बन्धित साहित्य का अर्थ

सम्बन्धित साहित्य का अर्थ अनुसंधान की उन सभी प्रकार की पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित शोध प्रबन्ध, ज्ञान कोषो एवं

अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन के माध्यम से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा को तैयार करके कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

सिंह, कौशेलन्द्र प्रताप (2007) ने जान डीवी एवं गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया। इन्होंने अपने शोध अध्ययन में यह पाया कि शिक्षा का लक्ष्य बालक के विचारों स्पष्ट बनाना एवं उनका समाजीकरण करना तथा सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों का निर्माण करना आदि होना चाहिए तथा बालक को स्वानुभव, प्रयोग एवं करके सीखने की प्रेरणा प्रदान की जानी चाहिए।

बच्चों की शिक्षा का इस तरह प्रबन्धन करें कि बच्चे सीखने में स्वयं रूचि लें तथा स्कूल में ठहरें, भाग जाने का नाम तक न लें, छात्रों की दैनिक गतिविधियों और उनके शैक्षिक एवं पारिवारिक वातावरण के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हो सकेगी। जैसे वस्त्रादि, नाखून एवं अन्य शारीरिक स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी सप्ताह में एक बार अवश्य प्रदान करना चाहिए, गिजुभाई एवं डॉ0 सम्पूर्णानन्द के विचारों के आधार पर बच्चों के अन्दर ऐसे भाव विकसित होगा जिससे वे सीखने के लिए स्वयं प्रेरित हो सकेगें, गिजुभाई एवं डॉ0 सम्पूर्णानन्द के विचारों के आधार पर सरकार द्वारा संचालित तमाम योजनाओं के सही क्रियान्वयन से उनमें अपव्यय तथा अवरोधन की बढ़ती प्रवृत्ति को रोका जा सकेगा, गिजुभाई एवं डॉ0 सम्पूर्णानन्द के विचारों के आधार पर बच्चों की रूचि, योग्यता, आवश्यकता तथा क्षमता के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया के द्वारा अपराधी बालक, समस्यात्मक बालक, पिछड़े बालकों की समस्याओं को दूर कर उन्हें राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकेगा तथा गिजुभाई एवं डॉ0 सम्पूर्णानन्द के विचारों के आधार पर शिशुओं का मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक विकास कर उन्हें उच्च शिक्षा के लिए शारीरिक तथा मानसिक रूप से तैयार किया जा सकेगा।

सिंह प्रवीण कुमार (2007) ''भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों के योगदान का तुलनात्मक अध्ययन'' (पी–एच0 डी0 शिक्षा एम0 जे0 पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली 2007)

अध्ययन के उद्देश्य समाजवादी चिन्तकों के जीवन दर्शन तथा शिक्षा दर्शन समाज एवं संस्कृति का अध्ययन, शिक्षा के विभिन्न आयामों जैसे– उद्देश्य पाठ्यक्रम शिक्षण विधि नारी शिक्षा साक्षरता अभियान विज्ञान तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा इतिहास शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा आदि विषयों का अध्ययन, शिक्षा के विभिन्न चरणों जैसे प्राथमिक माध्यमिक व उच्च शिक्षा एवं शिक्षा के माध्यम पर समाजवादी चिन्तकों के सुझाव का अध्ययन तथा समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का मूल्याकंन तुलनात्मक समीक्षा का अध्ययन।

अध्ययन विधि

अनुसंधानकर्ता ने शोध अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का समुचित अवलोकन किया है। शोध अध्ययन ऐतिहासिक व तुलनात्मक पद्धति पर आधारित है।

निष्कर्ष: प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रवीण कुमार सिंह ने विभिन्न भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। प्रवीण कुमार सिंह ने भारतीय समाजवादी चिन्तकों में डॉ0 मनोहर लोहिया डॉ0 सम्पूर्णानन्द आचार्य नरेन्द्र देव व जयप्रकाश नारायण आदि के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया है। अनेक समावादी चिन्तक विशेष कर आचार्य नरेन्द्रदेव डॉ0 सम्पूर्णानन्द जयप्रकाश नारायण प्रो0 राजाराम शास्त्री उच्च काटि के शिक्षक शी थे। आचार्य नरेन्द्रदेव व डॉ0 सम्पूर्णानन्द दो ऐसे समाजवादी चिन्तक हुये जो शिक्षक के रूप में उच्च काटि के निष्ठावान शिक्षक और शिक्षाविदों में महान शिक्षाविद थे। डॉ0 राममनोहर लोहिया मौलिक एवं बुद्धिमत्ता एवं बहुआयामी प्रतिभा के धनी दार्शनिक ऋषिक विद्वान थे। उनका नाम समावादियों में आदर के साथ लिया जाता है। डॉ0 लोहिया ने सार्वजनिक शिक्षा को सफल बनाने का आहवान किया। जयप्रकाश नारायण भारतीय समाजवाद के प्रमुख नेता प्रचारक तथा एक महान राष्ट्रीय संघर्षकर्ता रहे थे। जयप्रकाश नारायण ने अपनी सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षा में व्यापक सुधार की वकालत की। समस्त समाजवादी चिन्तको ने शिक्षा के माध्यम के प्रश्न पर गंभीरता से मनन किया ब्रिटिश शिक्षा पद्धति आलोचना की। सभी समाजवादी चिन्तक ने भारतीय शिक्षा पद्धति में सुधार करने का प्रयास किया तथा जीवन पर्यन्त सामाजिक व शैक्षिक व्यवस्था में लगे रहे।

अध्ययन के उद्देश्य

1. गिजू भाई के अनुसार शिक्षक के संबंध में विचारों का अध्ययन करना।
2. गिजू भाई के अनुसार विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना।

अध्ययन में सम्मिलित व्यक्तित्व

महान् स्वतंत्रता सेनानी, देश के अग्रणी बाल शिक्षा शास्त्री गिजू भाई बधेका का जन्म 15 नवम्बर सन 1885 ई को गुजरात के चितल, सौराष्ट्र प्रांत में हुआ था। इनके पिता भगवान दास जी बधेका और माता काशीबा देवी काफी धार्मिक प्रवृत्ति के थे। गिजू भाई पर भी माता–पिता के धार्मिक प्रवृत्ति का स्पष्ट प्रभाव पड़ा। पाँच वर्ष की आयु में सरस्वती पूजन के साथ उन्हें शिक्षा दीक्षा के लिए बतलभीपुर की प्राथमिक शाला में भेजा गया जहाँ चारों तरफ मार–पीट, डाट–डपट और भय का साम्राज्य था। गिजू भाई ने यह सब देखा और आगे चलकर प्राथमिक विद्यालय के दृष्यों को शब्दों में बाँधा। 1857 में गिजुभाई का प्रथम विवाह स्व0 हरिबेन के साथ हुआ जबकि 1906 में श्रीमती जड़ीबेन के साथ द्वितीय विवाह हुआ। 1907 में वे पूर्वी अफ्रीका चले गये तथा 1909 में वापस भारत आ गये। 1910 में उन्होंने बम्बई में कानून की पढ़ाई आरम्भ की तथा 1913 में वे बढ़वाण कैम्प में हाईकोर्ट में लीडर हो गये। 1915 में वे श्री दक्षिणामूर्ति भवन के विधिक सलाहकार बन गये तथा 1916 में 'दक्षिणामूर्ति' विद्यार्थी भवन' से सम्बद्ध हो गये। 1920 में उन्होंने बाल–मन्दिर को स्थापित किया और वकालत का पेशा छोड़कर पूरी तरह बाल–शिक्षा के लिए समर्पित हो गये और इस क्षेत्र में उन्होंने बहुत सारे नवीन प्रयोग किये।

शोध सीमांकन

प्रस्तुत शोध गिजू भाई बधेका जी के शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण सम्बन्धी विचारों का अध्ययन एवं वर्तमान समय में उसकी उपयोगिता को प्रस्तुत करने के लिए किया गया। यह शोध अध्ययन गिजू भाई द्वारा प्रस्तुत शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण सम्बन्धी विचारों एवं वर्तमान समय में उसकी उपयोगिता तक ही सीमित रहा।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

वर्तमान अध्ययन गिजू भाई के ग्रन्थों, लेखों तथा अन्य स्रोतों के आधार पर उनके शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण को सुव्यवस्थित किया गया। शोध अध्ययन में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि को अपनाया गया।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में गिजू भाई द्वारा रचित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्रों का तथा गिजू भाई के बारे में विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों

द्वारा रचित पुस्तकों, लेखों तथा अन्य अध्ययन सामग्री का अध्ययन किया गया।

गिजू भाई जी के शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण वातावरण सम्बन्धी विचार, निष्कर्ष तथा उपयोगिता

शिक्षक सम्बन्धी विचार

किसी भी व्यवसाय से जुड़ने वाले व्यक्ति में उससे सम्बन्धित योग्यता होनी चाहिए। योग्यता–विहीन व्यक्ति व्यवसाय में टिक ही नहीं सकता। संसार में अनेक व्यवसाय हैं पर एक भी व्यवसाय ऐसा नहीं है कि जो शिक्षक व्यवसाय की तुलना में टिक सके। शिक्षक का व्यवसाय अतीत और वर्तमान को जोड़ता है तथा वर्तमान में जीवन्त रहकर भविष्य का गठन करता है शिक्षक का व्यवसाय समाज–जीवन, समाज–शास्त्र और समाज के भविष्य को निर्मित करने वाला व्यवसाय है।

शिक्षा की त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में शिक्षक का सदैव ही से महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यद्यपि विभिन्न दार्शनिकों के दार्शनिक चिंतन के अनुरूप शिक्षक की भूमिका व कार्य–पद्धति में कुछ अन्तर अवश्य परिलक्षित होते हैं तथापि किसी भी शिक्षाविद् द्वारा विद्यालय की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की महत्ता से इंकार नहीं किया गया है, उसकी भूमिका भले ही प्रत्यक्ष हो अथवा परोक्ष।

शिक्षक का पद भारतीय परम्परागत चिंतन में अत्यन्त सम्मानजनक व प्रतिष्ठापूर्ण माना गया था। समय के साथ उसकी स्थिति में परिवर्तन आया। गिजू भाई की शिक्षक एवं उसकी भूमिका की अवधारणा पर प्राचीन भारतीय आदर्शवादी दर्शन सहित प्रकृतिवादी व प्रयोजनवादी दर्शन का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मांटेसरी के शिक्षा–दर्शन से तो उन्होंने गहन प्रेरणा प्राप्त की है अतः उनके विचारों का सर्वाधि प्रभाव इनके चिंतन पर पड़ना स्वाभाविक ही है। शिक्षक के सम्बन्ध में गिजू भाई ने अपने साहित्य में स्थान–स्थान पर विस्तार से चर्चा की है। इतनी गहनता विस्तार से की गयी चर्चा इस तथ्य का द्योतक है कि गिजू भाई शिक्षा–प्रक्रिया में शिक्षक को अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते थे।

गिजु भाई की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इन्होंने शिक्षक को एक मित्र और पथ–प्रदर्शक के रूप में देखा है। इनके अनुसार शिक्षक के ऊपर बालक के विकास का बहुत भारी उत्तरदायित्व है।

शिक्षक मिशनरी की भावना से भरा हुआ होना चाहिए। उसमें शिक्षण के प्रति समर्पण की भावना होनी चाहिए। शिक्षक को बाल मनोविज्ञान और शरीर विज्ञान का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। उसे बालक की आवश्यकताओं, रुचियों, योग्यताओं, क्षमताओं, मनोवृत्तियों आदि से परिचित होना चाहिए। शिक्षक को मानवीय गुणों से युक्त होना चाहिए। उसमें बालकों के प्रति प्रेम, विश्वास, सहयोग और सहानुभूति आदि गुण होने चाहिए। शिक्षक को निराभिमानी होना चाहिए। उसमें नम्रता होनी चाहिए। उसे सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बालकों के साथ कोई अन्याय न हो जाये। शिक्षक में वाणी का संयम होना चाहिए। उसे यह समझना चाहिए कि कम से कम बोलना उसके लिए लाभप्रद है। शिक्षक को पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिए। उसे तो संतों की तरह प्रीतिमय और आध्यात्मिक होना चाहिए। शिक्षक की अन्तर्दृष्टि वैज्ञानिक की तरह सूक्ष्म और तीक्ष्ण होनी चाहिए। गिजु भाई ने शिक्षकों को बाल मन्दिर के पुजारी के रूप में देखा था। इन्होंने शिक्षकों से कहा– 'बच्चों को देवता समझो और विद्या मन्दिर में इनकी सेवा पुजारी की भाँति करो।' शिक्षकों से उनकी बहुत अपेक्षायें थीं। इनका कहना था कि समर्पित भाव से शिक्षकों को बालकों की सहायता और मार्गदर्शन करना चाहिए।

विद्यालय वातावरण सम्बन्धी विचार

विद्यालयी वातावरण की रचना कैसे की जाए? इसके भी तत्व गिजुभाई ने मॉण्टेसरी पद्धति से लिए हैं। अतः विद्यालय की रचना इस प्रकार हो– अपने सर्वोत्तम विकास के लिए मनुष्य को जिन–जिन चीजों की जरूरत है वे वातावरण या पर्यावरण में मौजूद है उसे पहचान कर, समझकर शालाओं में उपस्थित किया जाय। बातावरण बालक की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास के अनुरूप हो। शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए खुली हवा, स्वच्छता, अनुकूल समशीतोष्ण तापमान, स्वच्छ शौचालय, स्नानागार, धोने लायक शाला का फर्श, चौड़ी खिड़कियां, पौष्टिक भोजन, बागीचा, ऊँची छतें, लम्बे–चौड़े हाल तथा उससे सम्बद्ध छोटे–छोटे कमरे आदि शाला के लिए आवश्यक हैं। फनींचर, श्यामपट्ट, दरियां, पानी के बर्तन आदि के वनज सब बच्चों के कद और उम्र के मुताबिक हो ताकि उसे उपयोग में लाया जा सके। साधन नाजुक और सख्त दोनों प्रकार के हों जिससे बालक धीरज और सख्ती की सीख ग्रहण कर सके।

स्वयं काम करने के साधन, संगीत के साधन, खेलने–कूदने के साधन, सौन्दर्य और साज–सज्जा के साधन, बालक का स्वच्छन्द विचरण, घूमना–फिरना, प्रबोधक साहित्य अर्थात् पढ़कर–समझकर विकास करने का साहित्य आदि ऐसे साधन हैं जो मॉण्टेसरी शाला का वातावरण रचते हैं। इसलिए मॉण्टेसरी शाला को मानव प्रयोगशाला या आनन्द की प्रयोगशाला भी गिजुभाई ने कहा है।

जहाँ मॉन्टेसरी ने विद्यालय को शिशुगृह और फ्रोबेल ने बच्चों के बगीचे का नाम दिया, वहाँ गिजु भाई ने विद्यालय को बाल मन्दिर कहा। ऐसा बाल मन्दिर, जहाँ बालकरूपी भगवान की शिक्षकरूपी पुजारी सेवा करें। उन्होंने कहा कि बाल मन्दिर का बातावरण भयमुक्त होना चाहिए। बालक उत्साह से भरे हुए, हँसते–मुस्कराते हुये बाल मन्दिर में प्रवेश करें और बिना किसी थकान व परेशानी के हँसते–मुस्कराते हुये ही वहाँ से प्रस्थान करें। बाल मन्दिर में बालकों की रुचि, आवश्यकता और क्षमता के अनुसार सीखने के अवसर प्रदान किये जायें। उनको अवलोकन के अधिक से अधिक अवसर दिये जायें। वस्तुतः गिजु भाई के अनुसार यह बाल मन्दिर बाल विकास के प्रयोग स्थल हैं।

गिजु भाई ने विद्यालय को बाल मन्दिर की संज्ञा दी जहाँ बालक को देवता मानकर शिक्षकरूपी पुजारी उनकी सेवा करें। इन्होंने कहा कि विद्यालयरूपी बाल मन्दिर में बालक को सब प्रकार की सुविधायें उपलब्ध होनी चाहिए। विद्यालय का वातावरण भयमुक्त होना चाहिए। विद्यालय में बाल विकास के लिए स्वतन्त्र अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। विद्यालय बालकों के आकर्षण के केन्द्र होने चाहिए, जहाँ वे प्रसन्नता के साथ, बिना किसी चिन्ता और तनाव के शिक्षा प्राप्त कर सकें।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

गीजू भाई बधेगा जी के शिक्षक तथा विद्यालयी वातवरण सम्बन्धी विचारों का अध्ययन के समान अन्य शिक्षाशास्त्रियों के शिक्षक तथा विद्यालयी वातवरण सम्बन्धी विचारों का अध्ययन किया जा सकता हैं। गीजू भाई बधेगा जी के शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण सम्बन्धी विचारों का अन्य शिक्षाशास्त्रियों के शिक्षक तथा विद्यालय वातावरण सम्बन्धी विचारों से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता हैं।

सन्दर्भ

1. उपाध्याय, डॉ0 प्रतिभा भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियाँ, शारदा पुस्तक भवन, 11, यूनिवर्सिटी रोट, इलाहाबाद, पृष्ठ–57.
2. कपिल, एच0 के0: अनुसंधान विधियाँ आगरा भार्गव प्रकाशन, पृष्ठ–211.
3. सिंहल, महेश चन्द्र भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याँयें, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी, जयपुर 1971, पृष्ठ–96.
4. शाह (1993) 'समकालीन भारतीय शैक्षिक चिन्तन और संगीत शिक्षण' के अन्तर्गत टैगोर, गाँधी और गिजुभाई के विचारो

पर अध्ययन, राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, पृष्ठ–143.
5. बघेका गिजूभाईः दिवास्वप्न, जयपुर गीतांजली प्रकाशन, 2002, पृष्ठ–78.
6. तिवारी, रमेष चन्द्र (2007): प्राथमिक शिक्षा में गिज्जुभाई के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता में अध्ययन, शोधग्रन्थ चौ0चरण सिहं वि0 विश्वविद्यालय, मेरठ।